जैन
# पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

**जबतक स्वयं परखने की दृष्टि न हो, उधार की बुद्धि से कुछ लाभ नहीं होता।**

– बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ : 10

वर्ष : 28, अंक : 6 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (द्वितीय)2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

**सम्पादक की कलम से ...**

## सोभागमलजी पाटनी का निधन :

## एक अपूरणीय क्षति

स्व. पण्डित नेमीचन्दजी पाटनी के लघु भ्राता सम्पूर्ण दि. जैनसमाज में जाने-माने बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी 86 वर्षीय समाजसेवी **श्री सौभाग्यमलजी पाटनी, मुम्बई** का दिनांक 6 जून, 05 को रात्रि में देहावसान हो गया है।

आप नियमित स्वाध्याय तो करते ही थे, प्रतिदिन 2-3 घण्टे गुरुदेवश्री का टेप प्रवचन भी सुनते थे। तत्त्वप्रचार-प्रसार एवं समाजसेवा की अनेक गतिविधियों में आपका सक्रिय सहयोग रहता था। नि:शुल्क साहित्य वितरण में आपकी विशेष रुचि थी। सत्साहित्य प्रकाशन के साथ श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के अन्तर्गत जैनदर्शन शास्त्री विद्वान तैयार करने हेतु आपकी ओर से 25 छात्रों को नि:शुल्क पढ़ाने की पूरी व्यवस्था है।

आप स्वयं तो एक अच्छे उद्योगपति थे ही, बेटों ने भी पाटनी कम्प्यूटर सिस्टम (पी.सी.एस.) द्वारा कल्पनातीत प्रगति की, जिसके ऑफिस देश-विदेशों में हैं। रविन्द्र पाटनी फैमिलि चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से बीमार, वृद्ध, बेसहारा, निर्धन आदि अनकों को सहयोग दिया जाता है।

आचार्य कुन्दकुन्द के साहित्य के प्रति आपकी विशेष भक्ति थी। आप परमागमों का स्वाध्याय तो किया ही करते थे। सत्साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिये भी हृदय में तीव्र भावना रखते थे।

**( शेष पृष्ठ – 8 पर ....)**

# ३९ वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

*** देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारें हुये 1485 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। * प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 13 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। * शिविर में 53 विद्वानों का समाज को लाभ मिला। * बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 192 विद्यार्थी सम्मिलित। * प्रवचनसार, अष्टपाहुड एवं पंचास्तिकाय के हिन्दी पद्यानुवाद की संगीतमय कैसिट का विमोचन। * वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के कुल 58 नये सदस्य बनें। * शिविर में 75 हजार, 270 रुपयों का सत्साहित्य एवं 20 हजार रुपयों के कैसिट्स बिके।**

**कोल्हापुर (महा.) :** यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं श्री दिग. जैन सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट, कोल्हापुर द्वारा आयोजित 39 वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनांक 13 मई से 30 मई, 05 तक अनेक सफलताओं सहित सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन शुक्रवार, दिनांक 13 मई, 2005 को माननीय विधायक श्री गजेन्द्रजी ऐनापुरे के करकमलों से हुआ। झण्डारोहणकर्त्ता सौ. इन्दूमति अण्णासाहेब खेमलापुरे, घटप्रभा थीं।

समारोह की अध्यक्षता शिवाजी विश्व-विद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विलासराव संघवी ने की। इस अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में माननीय विधायक श्री राजू शेट्टी तथा विशिष्टअतिथि के रूप में श्री अभयकुमार सालुंखे एवं बापूसाहेब कल्लप्पा नरदेकर कुपवाड़ के अतिरिक्त विशिष्ट विद्वत्गण भी मंचासीन थे।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने सभा को संबोधित करते हुये वर्तमान युग में शिविरों की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का तथा श्री शांतिनाथजी खोत ने श्री दि. जैन सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट का परिचय दिया। सभा का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

शिविर के अवसर पर श्री अरविन्दजी जैन परिवार, कोल्हापुर द्वारा विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती वरजूबेन के सुपुत्र श्री जवेरचन्द, हीरालाल, अशोककुमार, ब्रजलाल, रमेशकुमार, महेन्द्रकुमार एवं समस्त हथाया परिवार घाटकोपर, मुम्बई तथा एक मुमुक्षु भाई मुम्बई थे।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार की प्रारंभिक गाथाओं पर तथा रात्रि में भगवान महावीर का जीवन दर्शन तथा निश्चय-व्यवहार, भेदविज्ञान, अनेकान्त-स्याद्वाद आदि विविध सिद्धान्तों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

**रात्रिकालीन प्रथम प्रवचनों में** पण्डित धन्यकुमारजी भोरे कारंजा, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित धन्यकुमारजी बेलोकर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विक्रान्तजी शहा सोलापुर, पण्डित जिनचन्दजी आलमान, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित अनंतजी विश्वंभर के एक-दो प्रवचनों का लाभ मिला।

**दोपहर व्याख्यान माला में** प्रारंभिक 10 दिनों तक पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर वालों के विशेष प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित फूलचन्दजी मुक्रिरवार हिंगोली, विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित जीवेन्द्रजी जडे, पण्डित विक्रान्तजी शहा सोलापुर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, पण्डित राजेन्द्रजी बंसल एवं पण्डित अमोलजी संघई हिंगोली के प्रवचनों का लाभ मिला।

**( शेष पृष्ठ – 4 पर ....)**

सम्पादकीय –

# नींव का पत्थर

**4** ह्न रतनचन्द भारिल्ल

## पूर्वाग्रह के झाड़ की जड़ें गहरी नहीं होती

बुन्देलखण्ड की प्रसिद्ध कहावत है, प्रचलित लोकोक्ति है कि ह्न

**जैसे जिसके नाले–नादियाँ, वैसे उनके भरका।[१]**
**जैसे जिनके बाप–महतारी, वैसे उनके लरका।।[२]**

माता–पिता के संस्कार सन्तानों पर पड़ते हैं, इस बात का ज्ञान कराने वाली उक्त कहावत में कहा गया है कि ह्न ''जैसे छोटे–बड़े गहरे–उथले नाले–नदियाँ होतीं हैं, उनके गढ्ढे भी वैसे ही छोटे–बड़े, गहरे–उथले होते हैं।

ज्योत्स्ना और विराग भी इसके अपवाद नहीं थे। जहाँ ह्न ज्योत्स्ना पर माँ की परछाई पड़ी थी, वहीं विराग पर पिता के व्यक्तित्व की छाप थी। तभी तो विराग ने उच्च शिक्षा के लिए माँ के मना करने पर भी अपना आग्रह चालू रखा था। अन्त में माँ को ही मुड़ना पड़ा। माँ ने वस्तु –स्वातंत्र्य के सिद्धान्त की शरण में जाकर और बेटे की होनहार का विचार कर एवं अपनी छाती पर धैर्य की शिला धरकर उसे इस विश्वास के साथ परदेश जाने की अनुमति दी थी कि एक दिन विराग अवश्य वापिस आयेगा।

बाद में जिसतरह जीवन के उत्तरार्द्ध में जीवराज को सद्‌बुद्धि आ गई और उसका मानवजीवन सार्थक हो गया। उसी तरह विराग भी विदेश से वापिस आ गया।

जीवराज के लकवा की बीमारी से ग्रस्त हो जाने से माँ समता के ऊपर अपनी बेटी ज्योत्स्ना के जीवन को संभालने, उसे पढ़ाने और योग्य वर तथा धार्मिक घर तलाशने की जिम्मेदारी विशेष बढ़ गई।

श्रद्धा में वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त का अटूट विश्वास होने पर भी जब तक गृहस्थ जीवन में अपनी संतान के प्रति राग है, तबतक उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाने के विकल्प नहीं छूटते।

माँ समता की यह भावना थी कि ज्योत्स्ना को ऐसा वर और घर मिले कि जिससे उसके पारिवारिक जीवन का निर्वाह भी शांतिपूर्वक हो और परलोक भी न बिगड़े। सौभाग्य से ऐसा ही बनाव बन गया। ज्योत्स्ना को बुद्धिमान, स्वस्थ, सुन्दर और तेजस्वी गणतंत्र जैसा वर और एकदम खुले विचारों वाला घर–परिवार मिल गया। माँ आश्वस्त हो गई कि अब ज्योत्स्ना के दोनों लोक सुधर जायेंगे; परन्तु सगाई हो जाने के बाद समता की एक सहेली ने बिना माँगे मुफ्त में यह सलाह दे डाली कि ''और तो सब ठीक है, परन्तु आजकल सासें बहुत बदनाम हैं, लड़के का स्वभाव भी तेज है। जरा सोच–समझकर कदम उठाना।''

ह्न ह्न ह्न

समता ने सोचा ह्न ''जो माँ, बेटे के गोद में आते ही घर में बहू बुलाने के सपने सजोने लगती हो, ज्यों–ज्यों बेटा बड़ा होता है, त्यों–त्यों उन स्वप्नों को साकार करने के लिए उत्सुक होने लगती हो। निरन्तर प्रतीक्षारत रहती हो, और जिसने पलक पाँवड़े बिछाकर बहू का स्वागत किया हो; भला वह सासू माँ उसी बहू से बुरा व्यवहार कैसे कर सकती है ? और आखिर वह ऐसा काम करेगी ही क्यों; जिससे स्वयं बदनाम हो और पूरा परिवार दुःखी हो ? और लड़के को तेजस्वी तो होना ही चाहिए।''

समता आगे सोचती है ह्न ''सहेली की सलाह में ही कहीं कुछ दाल में काला है। कुछ औरतों की आदत भी इधर की उधर, उधर की इधर करने की होती है। ये ममता भी भिड़ाने में कम नहीं है।

बहू को घर में लाने के पहले सासें ही तो पसंद करती हैं । फिर भी न जाने क्यों ? लोक में सासों पर ही बुरे व्यवहार का आरोप लगाया जाता है? उन्हीं को बदनाम क्यों किया जाता है?'' खेर ! जो भी हो।''

यह सोचकर समता पहले से ही इस बात से सजग रही कि कहीं ''ऐसी ही कोई घटना ज्योत्स्ना के साथ न घट जाय अन्यथा उस सहेली की बात सच हो जायेगी और उसे कहने का मौका मिल जायेगा तथा मेरे हाथ केवल पछतावा रह जायेगा। अतः शादी के पहले सही–सही पता तो एक बार लगाना ही होगा।''

गहराई से शोध–खोज करने पर, समता को पता चला कि ''प्रायः होता यह है कि ह्न लड़कियों की शादी के पूर्व उनकी सखी–सहेलियाँ, भाभियाँ और बड़ी बहिनें आदि जो उन अविवाहित लड़कियों की मौज–मस्ती से, नाज–नखरों से तथा घरेलू कामों में हाथ न बटाने से परेशान रहतीं हैं, वे समय–समय पर हंसी–मजाक में अपनी प्रतिक्रिया प्रगट करते हुए कह दिया करतीं हैं कि 'बहना! और कुछ दिन मौज–मस्ती करलो, अपनी नींद सो लो और अपनी नींद जागलो; फिर सुसराल में तो सबके सो जाने पर ही सो सकोगी और सबसे पहले जागना पड़ेगा। और जब चक्की, चौका–चूल्हे का काम भी तुझे ही चुप–चाप रहकर करना पड़ेगा, तब नानी याद आयेगी।

**भूल जाओगी राग–रंग, अर भूल जाओगी छकड़ी।[१]**
**बात–बात में डाँट पड़ेगी सासू माँ की तगड़ी।।''**

यदि मुँह खोला, कुछ कहा–सुना और नाक–भौं सिकोड़ी तो पतिदेव द्वारा लात–घूँसा से पूजा भी हो सकती है; क्योंकि पत्नियों का पतियों से पिटना तो भारतीय परम्परा रही है।''

समता विचारों में डूबी यह सब सोच ही रही थी कि ह्न ज्योत्स्ना की भाभी बीच में ही बोली ह्न ''और हाँ, सुन ज्योति ! तेरी ससुराल में भाभी तो तेरे साथ जायेगी नहीं, जो अभी बिस्तर पर ही गर्म–गर्म चाय और बिस्कुट लाकर देती हैं। इसलिए ह्न कम से कम चाय बनाना सीख ही ले।''

यह सब देख/सुनकर समता इस निष्कर्ष पर पहुँची कि ह्न ''सुसराल के बारे में ऐसे कमेन्ट्स सुनते–सुनते लड़कियाँ ससुराल पक्ष से आतंकित होकर पूर्वाग्रहों में पलती हैं और तनावग्रस्त हो जाती हैं। धीरे–धीरे उन पूर्वाग्रहों से प्रभावित होकर वे मुखर हो जाती है। उनका मानस ऐसा बन जाता है कि मानो वे सुसराल नहीं, बल्कि किसी युद्धस्थल की सीमा रेखा पर जा रहीं हों।''

ससुराल पहुँचते ही मैं–मैं, तू–तू से बात प्रारंभ होती और बात–बात में वाक्‌युद्ध प्रारंभ होने लगता।

इस मैं–मैं, तू–तू के संदर्भ में यदि बहुएँ आत्मनिरीक्षण करें, और सासू माँ के उन संजोये स्वप्नों का सर्वेक्षण करें, जो सासू माँ ने बहू के शुभागमन के पूर्व संजोये थे तथा उस दृश्य को याद करें, जब उसने पलक पाँवड़े बिछाकर बहू का स्वागत किया था तो कभी ऐसी मैं–मैं, तू–तू की समस्या ही नहीं आयेगी।''

समता आश्वस्त हो गई कि इसमें सासों का कोई दोष नहीं है, बेटियाँ और बहुएँ भी अधिक दोषी नहीं है। यह तो घर के आंगन में रोपा गया कटीला झाड़ है, जिसे आसानी से उखाड़ा जा सकता है। इस पूर्वाग्रहरूप झाड़ की **जड़ें जमीन में गहरी नहीं, पत्थर पर हैं,** अतः चिन्ता की कोई बात नहीं हैं। मैं ज्योति के इस हठाग्रह के अंकुर को पनपने ही नहीं दूँगी, उसके दिल से निकाल दूँगी।

ह्न ह्न ह्न

माँ ममता सोचती है ह्न ''गणतंत्र के माता-पिता पूर्व परिचित ज्योत्स्ना जैसी सुशील भोली-भाली बुद्धिमान बहु को पाकर अपने जीवन को धन्य मान रहे हैं, परन्तु प्रारंभ में एक-दूसरे की भावनाओं को न समझ पाने से कभी-कभी सास-बहू के विचारों में मतभेद भी खड़े होना अस्वाभाविक नहीं है। यद्यपि सास और बहू ह्न दोनों के हृदय साफ हैं, परन्तु विचार भेद तो हो ही सकते हैं। जो सोचते हैं, विचारते हैं, उन्हीं के विचारों में ही तो कभी किसी बात में सहमति तो कभी किसी बात में असहमति भी होती है। जिनके मति होती है, उन्हीं के तो सहमति और असहमति होती है। अतः यह कोई बुरा लक्षण नहीं है। विचार मन्थन में यह जरूरी भी है, मन्थन से ही तो मक्खन निकलता है न! अन्यथा सही और अच्छे निष्कर्ष ही नहीं निकलेंगे। हाँ, बातों-बातों में अशान्ति और मन मुटाव नहीं होना चाहिए।''

ह्न ह्न ह्न

माँ समता ज्योति बेटी को समझाती है ह्न ''बहुएँ या सासें कोई कठपुतलियाँ तो नहीं; जो दूसरों की उंगलियों के इशारे से नाचतीं हैं। सबकी अपनी-अपनी इच्छायें होती हैं, अपने-अपने विचार होते हैं, उन्हें सुनें-समझें; फिर एकमत हों तो ठीक; अन्यथा कोई बात नहीं। जो जिसे जँचे करने दो; सब अपने-अपने मन के मर्जी के मालिक हैं, राजा हैं, उन्हें मर्जी का मालिक और मन का राजा ही रहने दें।

वस्तुस्वातंत्र्य के महामंत्र का स्मरण करके कोई किसी के काम में हस्तक्षेप न करें। **न स्वयं अपने मन को मारे और न दूसरों के मन को मरोड़े।** यही सुख-शान्ति से रहने का महामंत्र है। अतः वस्तुस्वातंत्र्य का महामंत्र जपो और आकुलता से बचो। यही संतों का उपदेश है, आदेश है।'' ह्न यह सब समता ने ज्योति को समझाया।

ह्न ह्न ह्न

ज्योत्स्ना ने कहा ह्न ''माँ ! तुम्हारा वस्तु स्वातंत्र्य का मंत्र वास्तव में सब मंत्रों में श्रेष्ठ है। समस्त विषय-विकार का विष नष्ट करने में समर्थ हैं, परन्तु इसे कैसे जपें? इसकी विधि बताओ न !''

माँ ने कहा ह्न ''हाँ सुनो ! वस्तुस्वातंत्र्य सिद्धान्त को समझने/समझाने के लिए पहले यह जाने कि ह्न स्वतंत्रता के तीन रूप होते हैं। (1) अस्तित्वात्मक स्वतंत्रता (2) क्रियात्मक स्वतंत्रता (3) ज्ञानात्मक स्वतंत्रता। इनमें प्रथम व द्वितीय स्वतंत्रता तो सभी वस्तुओं में अनादि से है ही; क्योंकि प्रत्येक द्रव्य-गुण-पर्यायरूप वस्तुओं का अस्तित्व और उनमें होने वाला क्रियारूप स्वभाव-परिणमन तो अनादि से स्वाधीनतापूर्वक हो ही रहा है; किन्तु ज्ञानात्मक स्वतंत्रता अज्ञानी जीवों को नहीं है अर्थात् अज्ञानी को अपने स्वतंत्र अस्तित्व और क्रिया की स्वाधीनता का ज्ञान नहीं है।

अज्ञानी जीव वस्तुस्वातंत्र्य के ज्ञान से अनभिज्ञ होने से अपनी सुख-शान्ति को देहाधीन, कर्माधीन और सुखद संयोगों की अनुकूलता में खोजता है। इसकारण स्वतंत्र होते हुए भी ज्ञानात्मक स्वतंत्रता नहीं है। किसी ने कहा भी है ह्न **सबके पल्ले लाल, लाल बिना कोई नहीं।**
**यातें भयो कंगाल, गाँठ खोल देखी नहीं।।**

यह कहावत तब की है जब लोग बहुमूल्य हीरे जवाहरातों को धोती के पल्ले में गाँठ लगाकर बाँधकर रखते थे। उस बात को कवि ने उक्त दोहे में कहा है कि ह्न सबके पल्ले में बहुमूल्य लाल बंधे हैं, अर्थात् सभी लखपति हैं, परन्तु उन्होंने अपने पल्ले की गाँठ खोल कर ही नहीं देखी, यही उनकी कंगाली का कारण है।

हीरों से भी अधिक अमूल्य, पूर्ण स्वतंत्र, स्वावलम्बी, स्वसंचालित एवं स्वयं सुख स्वभावी होते हुए स्वयं को नहीं जाना, अपने को नहीं खोजा, देहादि में ही अपने अस्तित्व को मानता-जानता रहा है। जहाँ सुख नहीं वहाँ सुख ढूँढ़ा, जहाँ हीरे नहीं, वहाँ हीरे खोजे।''

माँ श्री ने आगे कहा ह्न ''इस तरह अज्ञानी जन अपने उस मौलिक स्वरूप से अपरिचित हैं, अनभिज्ञ हैं, इस कारण जो स्वाभाविक कार्य-कारण व्यवस्था है, सहज निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध हैं, उन्हें वैसा न मानकर उनमें अपना एकत्व एवं कर्तृत्व मानते रहे हैं। और बिना वजह हर्ष-विषाद करते हैं, सुखी-दुःखी होते हैं और राग-द्वेष में पड़कर अपना संसार बढ़ाते हैं। उन्हें अपने ज्ञान में उस स्वतंत्रता का पता नहीं होने से स्वयं पराधीन हो रहे हैं ह्न ऐसी स्वतंत्रता के एक नहीं अनेक उदाहरण पुराणों में और लोक में भी भरे पड़े हैं।

कहा जाता है कि तोता पकड़ने वाले अपने ही आंगन में एक नलनी पिरोई रस्सी बाँधते हैं, रस्सी के नीचे खाने का दाना भी रख देते है, तोता आता है, नलनी पर बैठता है, उसके बैठते ही नलनी घूमती है तोता औंधा लटक जाता है, वह घबराहट में अपने उड़ने की चाल भूल जाता है और बहेलिये द्वारा पकड़ लिया जाता है। इसी तरह यह जीव अपनी स्वतंत्रता की चाल भूला हुआ है। कहा भी है ह्न

**''अपनी सुध भूल आप, आप दुःख उपायो।**
**ज्यों शुक नभ चाल विसरि नलनी लटकायो।।**

इस तरह ज्ञानात्मक स्वतंत्रता के अभाव में जीव दुःखी हैं।

इसी संदर्भ में एक उदाहरण रेगिस्तानी ऊँटों का है ह्न सौ ऊँटों का काफिला लिए रेबारी (काफिले का मालिक) शहर की ओर जा रहा था। रेबारी के पास रास्ते में पड़ाव पर ऊँटों को बाँधने के लिए १०० खूँटी व रस्सियाँ थीं।'' रास्ते में एक खूँटी व रस्सी खो गई। ९९ रस्सियों से ९९ ऊँट तो पड़ाव पर बाँध दिये, किन्तु १००वें ऊँट को बाँधने की समस्या थी। रेबारी को उपाय सूझा और उसने उस ऊँट के पास जाकर ठक-ठक की आवाज की और उसके गले में हाथ फेरकर उसे बँधने का भ्रम पैदा कर दिया। वह ऊँट अपने को बँधा मानकर बैठ गया। सवेरे ९९ ऊँट खोल दिए और वे चल भी दिये; परन्तु वह सौवाँ ऊँट उठा ही नहीं। उसे भ्रम था कि मैं तो बँधा हूँ, क्योंकि मालिक ने खोला ही नहीं था, मालिक भी समझ गया कि मैंने बेचारे को खोला ही नहीं तो यह उठेगा कैसे? वह ऊँट के पास गया और जैसे बाँधने की क्रिया की थी, वैसे ही खोलने की प्रक्रिया की तो ऊँट तुरंत उठा और चल दिया।''

माँ के इस मार्मिक संदेश को सुनकर ज्योत्स्ना बहुत प्रसन्न हुई। बचपन में सखी-सहेलियों और भाभियों द्वारा की गई भ्रमोत्पादक बातों से उसके मन में सास, पति और ससुरालवालों के प्रति पूर्वाग्रह से जो भ्रम उत्पन्न हो गया था, वह माँ के द्वारा वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त को समझाने से तथा ससुराल पक्ष की मनोवैज्ञानिक विचारधारा का ज्ञान कराने से समाप्त हो गया; क्योंकि भ्रम रूप झाड़ की जड़ें तो पत्थर पर ही होती हैं न।

इसीतरह जबतक संसारी जीव स्वतंत्र होते हुए भी अपनी मान्यता में स्वयं को बंधन रूप मानेगा तब तक मुक्त नहीं हो सकता। अतः हम वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त के द्वारा अपनी स्वतंत्रता का ज्ञान करें और सुखी हों। ●

( पृष्ठ 1 का शेष ....)

**स्थानीय लोगों की विशेष मांग पर मराठी भाषा में हुये प्रवचनों में** पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित कीर्तिंजयजी शास्त्री, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, विदुषी स्वयंप्रभा पाटील, पण्डित गुलाबचन्दजी शास्त्री एलोरा, पण्डित शांतिनाथजी वसगडे, पण्डित संजयजी राऊत, पण्डित प्रदीपजी माद्रप, पण्डित किशोरजी बंड, पण्डित नेमिनाथजी बालिकाई, पण्डित विजयजी कालेगोरे, पण्डित शीतल हेरवाडे, पण्डित राजेन्द्रजी पाटील, पण्डित प्रशांतजी मोहरे, पण्डित रोहन रोटे एवं पण्डित प्रसन्न शेटे का लाभ मिला।

**प्रौढ़ कक्षायें –** क्रमबद्धपर्याय की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, गुणस्थान विवेचन की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन, तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, नयचक्र की कक्षा पण्डित संजीवकुमारजी गोधा तथा चार अभाव की कक्षा पण्डित विक्रान्तजी शहा व पण्डित अमोलजी संघई ने ली ।

प्रात: 5 बजे की प्रौढ़ कक्षा में पण्डित कोमलचन्दजी जैन टड़ा, पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा के प्रवचनों का लाभ मिला।

**प्रशिक्षण कक्षायें –** बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा बहुत ही रोचक शैली में ली गई। प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं प्रवेशिका शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित कोमलचन्दजी टड़ावालों ने ली।

**प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में** पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित गुलाबचन्दजी बोरालकर, पण्डित कीर्तिंजयजी गोरे, पण्डित संजयजी राऊत, पण्डित शीतलजी हेरवाडे, श्रीमती रंजना बंसल, श्रीमती लता रोम, कुमारी अनुप्रेक्षा जैन, पण्डित उमाकान्तजी शास्त्री, पण्डित आलोककुमारजी शास्त्री, पण्डित प्रदीपजी माद्रप, पण्डित संतोषजी मिन्चे एवं पण्डित रमेशजी शिरहट्टी का सराहनीय सहयोग रहा।

बालवर्ग की कक्षाओं का संचालन श्रीमती शुद्धात्मप्रभा टडैया के निर्देशन में हुआ; जिसमें लगभग 150 छात्र सम्मिलित हुये। ज्ञातव्य है कि अभ्यास कक्षायें हिन्दी, मराठी, कन्नड एवं अंग्रेजी भाषाओं में संचालित होती थी।

**विमोचन :** 19 मई, 2005 को श्री भबूतमलजी भण्डारी परिवार, बैंगलोर द्वारा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा किये गये प्रवचनसार पद्यानुवाद एवं अष्टपाहुड़ पद्यानुवाद तथा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा किये गये पंचास्तिकाय पद्यानुवाद की संगीतमय ऑडियो कैसिट्स एवं सी.डी का विमोचन किया गया।

शिविर में डॉ. महावीरप्रसाद जैन उदयपुर द्वारा लिखित शोध प्रबन्ध 'डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल व्यक्तित्व एवं कृतित्व'; डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा लिखित सत्ता का सुख, सुख की तलाश, संस्कार का चमत्कार; डॉ. राजेन्द्र बंसल द्वारा लिखित सिद्धलोक व सिद्धत्व प्राप्ति के साधनासूत्र; छहढाला मराठी पद्यानुवाद एवं जिनेन्द्र-अष्टक आदि पुस्तकों का विमोचन हुआ।

**पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं भारतवर्षीय वीतराग-विज्ञान पाठशाला समिति का अधिवेशन :** दिनांक 22 मई को आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता डॉ. विजयकुमार हुक्किरे मुम्बई ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री शुभचन्द्र टक्कलकी कोल्हापुर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नरेन्द्रजी जैन, श्री कैलाशचन्दजी जैन, श्री रमेशचन्दजी जैन मंचासीन थे।

ट्रस्ट का परिचय ब्र. यशपालजी ने दिया तथा संचालन पं. शांतिकुमारजी पाटील ने किया। अध्यक्ष महोदय द्वारा स्मारक ट्रस्ट एवं पाठशाला समिति के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये कहा कि यह जो बुनियादी स्तर का कार्य किया जा रहा है, वही भविष्य में जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार की रीढ़ बनेगा।

**श्री दि. जैन सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट का अधिवेशन** 27 मई को विधायक श्री शरद पाटील के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर स्वाध्याय ट्रस्ट के सर्व सम्मति से चुने गये अध्यक्ष श्री शांतिनाथजी खोत एवं कार्याध्यक्ष श्री बाळासाहेब वसवाडे का सम्मान किया गया। ट्रस्ट का परिचय पं.जिनचन्दजी शास्त्री ने दिया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने ट्रस्ट की गतिविधियों की प्रशंसा करते हुये आगामी गतिविधियों हेतु स्वाध्याय ट्रस्ट के पदाधिकारियों को विशेष मार्गदर्शन दिया । ब्र. यशपालजी जैन एवं श्री कैलाशचन्दजी जैन ने भी सभा को संबोधित किया। सभा का संचालन श्री प्रसन्न शेटे ने किया।

**पण्डित जिनचन्दजी शास्त्री का अभिनन्दन –** शनिवार, दिनांक 28 मई, 2005 रात्रि 8 बजे डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा पण्डित जिनचन्दजी आलमान का सम्मान समारोह पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

विशिष्ट अतिथियों के रूप में सौ. इन्दुमति अण्णासाहेब खेमलापुरे, सौ. राजमती बापूसाहेब नरदेकर एवं पण्डित रावसाहेब नरदेकर के अतिरिक्त पण्डित जिनचन्दजी के पिता श्री नेमिनाथजी आलमान एवं माताजी सौ.लक्ष्मीबाई भी मंचासीन थीं।

पं. शांतिकुमारजी पाटील ने पं. जिनचन्दजी शास्त्री का परिचय दिया । तत्पश्चात् उनका शाल, श्रीफल, प्रशस्ति एवं नकद राशि भेंटकर सम्मान किया गया। श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल ने डॉ. भारिल्ल चेरिटेबिल ट्रस्ट का परिचय दिया ।

इसी अवसर पर पताशे प्रकाशन संस्था द्वारा भी श्रीफल, वस्त्र एवं राशि भेंट कर आपको अभिनन्दित किया गया। आपके माता-पिता का भी वस्त्रादि द्वारा सम्मान किया गया । संस्था का परिचय ब्र. यशपालजी जैन ने दिया। ज्ञातव्य है कि इस अवसर पर पताशे प्रकाशन संस्था के सदस्य श्री दिलीप शेडसाले नांद्रे, श्री श्रीपालजी खेमलापुरे सांगली एवं श्री ए.ए.पाटील सांगली भी उपस्थित थे।

अन्त में पण्डित जिनचंदजी शास्त्री का उद्‌बोधन एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का अध्यक्षीय भाषण हुआ ।

**प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन–** रविवार, दिनांक 29 मई, 2005 को रात्रि में आयोजित प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्यअतिथी के रूप में दक्षिण भारत जैन सभा के अध्यक्ष माननीय कल्लापन्नाजी अवाडेदादा एवं कोल्हापुर जिला परिषद के अध्यक्ष श्री डी.सी.पाटील मौजूद थे। विशिष्टअतिथियों में श्री शांतिनाथजी खोत, श्री बाळासाहेब वसबाडे, श्री बाळासाहेब निल्ले, एडवोकेट किरण महाजन, श्री धनंजय दिपे तथा समस्त विद्वान एवं प्रशिक्षण कक्षाओं के अध्यापक भी मंचासीन थे।

संचालन कु. परिणति पाटील ने तथा मंगलाचरण अंकित जैन ने किया।

**दीक्षान्त एवं समापन समारोह –** सोमवार, 30 मई, 05 को शिविर का दीक्षान्त एवं समापन समारोह पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता एवं श्री अविनाशजी टडैया मुंबई के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुआ। विशिष्टअतिथि के रूप में श्री एम.एल.पाटील शेडबाल एवं श्री नाभिराजजी गंगाई कोल्हापुर मंचासीन थे । पारितोषिक वितरण सौ. इन्दुमति अण्णासाहेब खेमलापुरे, घटप्रभा ने किया।

डॉ. भारिल्ल के मार्मिक दीक्षांत भाषण के अतिरिक्त श्रीमती मीनल जैन, अनुपमा जैन आदि अनेक शिविरार्थियों ने अपने अनुभव सुनाये। पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की एवं ब्र. यशपालजी ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम स्थान विपुल चौगुले मालगाँव, द्वितीय स्थान कु.राधिका जैन कोलकाता एवं तृतीय स्थान व्रतेश जैन बकस्वाहा ने प्राप्त किया तथा प्रवेशिका प्रशिक्षण में कु.परिणति पाटील प्रथम, अंकित जैन लूणदा द्वितीय एवं भारती जैन तृतीय स्थान पर रहीं।

कोल्हापुर नगर में आयोजित इस प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से महाराष्ट्र प्रान्त में महती धर्म प्रभावना हुई। ●

श्री. ऐलक पन्नालाल दिगंबर जैन पाठशाला, सोलापूर (इ.स. 1885 संस्थापित) द्वारा संचलित,

# वालचंद इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी, सोलापूर

एआयसीटीई नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त (इ.स. 1983 संस्थापित)

परस्परोपग्रहो जीवनाम्

सेठ वालचंद हिराचंद मार्ग, अशोक चौक, पोस्ट बॉक्स नं. 634, सोलापूर - 413 006 (महाराष्ट्र)

दूरभाष : 0217 - 2651388, 2653040, फॅक्स : 0217 - 2651538

ई-मेल : principal@witsolapur.org वेब साईट : www.witsolapur.org

प्रा. मोहनलाल मुलकुटकर - 09822516799

**"A" ग्रेड संस्था**

SAB/05

## सकल जैन समाज के छात्रों को,

चार वर्षीय इंजिनियरींग डिग्री कोर्स के लिए कम्प्युटर, मैकॅनिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स अँड कम्युनिकेशन, इलेक्ट्रॉनिक्स, इन्फॉरमेशन टेक्नॉलॉजी, प्रौंडक्शन तथा सिव्हील इंजिनिअरींग शाखाओ मे

## 50 प्रतिशत सीटें आरक्षित हैं

इंजिनीयरिंग डिग्री कोर्स के प्रथम वर्ष में **केवल जैन धर्मीय विद्यार्थीयों** से आवेदन पत्र मंगाये जाते है। पात्रता एवं विस्तृत जानकारी प्रवेश परिचय पत्र में दि गयी है। आवेदक बारहवी विज्ञान कक्षा अंग्रेजी, फिजिक्स, केमेस्ट्री एवं मेथॅमेटिक्स विषयोंके साथ उत्तीर्ण होना अनिवार्य है ।

## 12th - P.C.M. — 50% गुण चाहिये.

जैन अल्पसंख्यंक प्रवेश फॉर्म ६०० रू. नकद अदा करने पर W.I.T. सोलापूर के कार्यालय में मिल सकते है। यदि प्रवेश फॉर्म वेबसाईट से प्राप्त किये हो या झेरॉक्स कॉपी का उपयोग किया हो तो उसके साथ रू. ६०० का D.D. देना आवश्यक है।

प्रवेश फॉर्म कार्यालयमें दि. ०७.०७.२००५ शाम ५ बजे तक स्वीकृत किये जायेंगे।

**डॉ. एस. ए. हलकुडे**
प्राचार्य

**डॉ. रणजित गांधी**
मानद सचिव

तत्त्वचर्चा

## प्रवचनसार का सार 30

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

**( गतांक से आगे ....)**

प्रतिसमय परिवर्तन होना ये मेरा धर्म है, मेरा गुण है, मेरा स्वभाव है। यह मेरी पर्याय नहीं है; क्योंकि पर्याय तो उसका नाम है, जो चली जाती है; परन्तु यह मेरा स्वभाव नाशवान नहीं है।

नाशवान तो वह है, जिसका उत्पाद हुआ था; लेकिन उत्पादकत्व शक्ति (उत्पाद होना) का नाश नहीं हुआ है। इसे समझने से बहुत बड़ा आश्वासन/सम्बल मिलता है।

किसी माता का पुत्र उत्पन्न होते ही मर गया तो वह माता बहुत उदास हो जाती है। तब उस माता को आश्वासन देते हुए सभी समझाते हैं कि ह्न 'हो गया सो हो गया। अभी तू वृद्ध थोड़े ही हो गई।'

इसका आशय यह है कि अभी इस माता की उत्पादन क्षमता थोड़े ही समाप्त हो गई। अभी यह एवं इसका पति जीवित है तो दूसरा पुत्र उत्पन्न हो जाएगा, चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इसप्रकार लोग उस माता को आश्वासन देते हैं।

ऐसे ही आचार्य यह कह रहे हैं कि जिसका उत्पाद हुआ है, उसका व्यय हुआ है; परंतु उत्पादस्वभाव का व्यय थोड़े ही हुआ है, वह तो प्रतिसमय निरंतर चल रहा है। व्यय तो उसका हुआ है, जिसका उत्पाद हुआ था। राग का उत्पाद हुआ था एवं अब उसका ही व्यय भी हुआ; परंतु मेरी उत्पाद-व्यय शक्ति थोड़ी चली गई, वह तो अभी भी कायम है।

उत्पाद-व्यय की ध्रुवता ही ध्रौव्य है। यह भगवान आत्मा कभी नहीं पलटता है ह्न ऐसी नित्यता भी भगवान आत्मा में है। एवं यह भगवान आत्मा सदा पलटता है ह्न ऐसी अनित्यता भी इसमें नित्य है। यदि वह अनित्यता सर्वथा अनित्य ही होती तो वह समाप्त हो गई होती और हम मात्र नित्य ही रह जाते; परंतु अनित्यता अनादिकाल से है एवं अनंतकाल तक वैसी की वैसी रहेगी, कभी समाप्त नहीं होगी। वस्तु के स्वभाव में से अनित्यत्व धर्म नहीं निकल सकता है।

गुरुदेवश्री इसके मर्म को जिसप्रकार समझाते हैं, वह बड़ा ही मार्मिक है। वे कहते हैं ह्न 'पर्यायें निकल गईं, परंतु पर्याय प्रतिसमय द्रव्य में से निकले ह्न ऐसा द्रव्य का स्वभाव तो नहीं निकल गया।'

हम इसे इस रूप में भी समझ सकते हैं। हमारी ज्ञानपर्याय एकसमय में भगवान आत्मा को जान सकती है। सैनी पंचेन्द्रिय अपनी आत्मा का अनुभव कर सकता है। अभी भी हममें प्रतिसमय ऐसी ज्ञानपर्याय का उत्पाद हो रहा है, जिससे हम भगवान आत्मा को जानने में समर्थ हैं।

प्रत्येक सैनी पंचेन्द्रिय के क्षयोपशमज्ञान में इतनी क्षमता है कि वह अपनी आत्मा को जान सकता है। उसमें प्रतिसमय ऐसे ज्ञान का उत्पाद होता रहता है।

एक बालक को बीस रुपए दिए, तब वह तुरंत बाजार में जाकर कुल्फी खाता है। इससे उसके दाँत भी खराब होते हैं और पेट भी खराब होता है। उसी बीस रुपयों से वह बालक मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ भी खरीद सकता था। उस पैसे का वह सदुपयोग भी कर सकता था।

ऐसे ही यहाँ आचार्य कह रहे हैं कि जिस क्षयोपशमज्ञान से इस जीव ने विषय-कषाय को जाना है, राग-द्वेष को जाना है; उसी क्षयोपशम ज्ञान से यह जीव भगवान आत्मा को जानता है, जान सकता है। इसमें प्रतिसमय इतना ज्ञान उत्पन्न हो रहा है कि जिससे भगवान आत्मा को जाना जा सकता था।

आत्मा को नहीं जानकर और अप्रयोजनभूत पदार्थों को जानकर इस जीव ने ज्ञान की बर्बादी ही की है।

जब इस जीव को यह पता चलता है तो वह भयभीत हो जाता है; और वह सोचता है कि ज्ञान की इतनी बर्बादी; हाय राम ! मैं तो लुट गया।

यह जीव भयभीत न हो इसके लिए मेरा दूसरा महामंत्र यह है कि हे जीव! तेरा ज्ञान जितना बर्बाद हो गया, उसके लिए तू व्यर्थ शोक क्यों करता है ? अभी भी वर्तमान में प्रतिसमय ऐसी नूतन ज्ञानपर्याय उत्पन्न हो रही है, जो भगवान आत्मा को जान सकती है। अत: व्यर्थ चिन्ता मत कर।

एक व्यक्ति के यहाँ इन्कमटैक्स का छापा पड़ गया। जो करोड़ो रुपए रखे थे; वे सब ले गए। नौ गाड़ियाँ एवं नौ मकान सरकार ने जब्त कर लिए। तब यह बहुत शोक मनाता है। इससे पूछते हैं कि वे क्या छोड़ गए, तब यह कहता है ह्न 'एक मकान जिसमें हम रहते थे, एक गाड़ी जिसमें मैं बैठता था, एक दुकान और चालू खाता छोड़ गए, बाकी सब सील कर दिया।

इसपर इससे कहते हैं कि तुम व्यर्थ शोक क्यों मनाते हो ? जो तू भोगता था, वह सब छोड़ गए हैं; बल्कि जो बिल्कुल बंद था; तेरे उपभोग में नहीं आता था, उसे ले गए हैं। अभी तो कुछ नहीं गया है। तुम्हारे भोग में तो कुछ भी अंतर नहीं पड़ रहा है। बेडरूम, रसोई सबकुछ तो वैसा का वैसा ही है।

जिन चीजों को यह सम्हाल नहीं सकता था; जो इसके लिए व्यर्थ थी, इसके उपयोग में नहीं आती थीं और उपयोग को खाती थीं, उन्हें सील करके इन्कमटैक्सवालों ने इसके उपयोग की बचत ही की है; फिर भी यह व्यक्ति उन इन्कमटैक्सवालों को नालायक कहता है; परंतु इस जीव को यह मालूम नहीं है कि इन इन्कमटैक्सवालों से भी बड़ा इन्कमटैक्सवाला आनेवाला है जो इसका बचा हुआ मकान भी छीन लेगा, भोग सामग्री भी छीन लेगा। सारे संयोग छीन लेगा।

इसलिए हे जीव! जितनी ज्ञान की पर्यायें बर्बाद हुई हैं; उनके लिए मत रो ? अभी भी आत्मा को जानने योग्य ज्ञान प्रतिसमय उत्पन्न हो रहा है। बहुत दुर्लभता से तुम्हें यह क्षमता प्राप्त हुई है, यदि अभी नहीं चेता तो ऐसा कोई दूसरा समय नहीं आएगा।

जैसे वर्तमान में तुम्हारी भोग सामग्री को छीननेवाला इन्कमटैक्स ऑफिसर का आना अनिवार्य है; ऐसे ही यदि इस वर्तमान ज्ञानपर्याय की ऐसी क्षमता का सदुपयोग नहीं होगा तो वह निश्चित ही चली जावेगी।

यह देह छूटेगी तो एकेन्द्रियादिक में चला जाएगा। शरीर की कुछ भी विलक्षण स्थितियाँ बन सकती है। कभी भी किसी भी क्षण इस शरीर का वियोग संभव है। अत: जिस क्षण तक हमारे पास यह ज्ञान की क्षमता है; तबतक कुछ नहीं लुटा है।

आज भी यदि सम्हल जाए तो कुछ भी नहीं लुटा है; परन्तु कल का

कोई भरोसा नहीं है; अत: हे भाई! यह वस्तु का स्वरूप जो उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यमय है; इसे समझकर अपने आत्मा को जान ले ह्न इसी में तेरा कल्याण है।

## बारहवाँ प्रवचन

प्रवचनसार परमागम के ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापनमहाधिकार में सामान्य ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापनाधिकार की चर्चा चल रही है। इसमें वस्तु के सामान्य स्वरूप की चर्चा स्वरूपास्तित्व को इकाई मानकर की गई है।

भारतीय मुद्रा की इकाई रुपया है। पचास पैसे के सिक्के पर १/२ रुपये लिखा रहता है। पच्चीस पैसे के सिक्के पर १/४ रुपये, दस पैसे के सिक्के पर १/१० रुपये लिखा रहता है। इसका आशय यह है कि भारतीय मुद्रा में पैसे नामक कोई इकाई नहीं है, वह रुपये के अन्तर्गत भेद है और रुपया एक यूनिट है, इकाई है। इसीप्रकार गुणपर्यायात्मक वस्तु जैनदर्शन की इकाई (यूनिट) है।

उसमें जो अनंत गुण, असंख्य प्रदेश और अनंतानंत पर्यायें हैं; वे सब उसके अंतर्गत भेद हैं। इसके अतिरिक्त इससे भिन्न जो भी हैं, वे सब उसके लिए परद्रव्य हैं।

जैनदर्शन में पर के साथ जो संबंध की चर्चा होती है; उसे असद्भूत कहा जाता है; क्योंकि वह असद्भूतव्यवहारनय का विषय है। उसे ऐसा इसलिए कहा जाता है; क्योंकि वह वास्तविक नहीं है, एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कभी होता ही नहीं है।

वस्तु के भीतर जो भेद करके समझाया जाता है, उसे सद्भूत कहते हैं; क्योंकि वह भेद वस्तु में है, वह काल्पनिक नहीं है।

आत्मा के जो अनंतगुण हैं; वे वास्तविक हैं, काल्पनिक नहीं। अत: इनका नाम सद्भूत है; परन्तु भेद के लक्ष्य से विकल्प की उत्पत्ति होती है तथा आत्मा का कल्याण निर्विकल्प आत्मा की अनुभूति में है; इसलिए उसको भी व्यवहार कहकर हेय कहा गया है।

इसप्रकार हमें यह समझ लेना चाहिए कि पर के साथ संबंध बताने वाला व्यवहार असद्भूत है और अपने में ही भेद करनेवाला व्यवहार सद्भूत है।

लोक में पिता-पुत्र के संबंध की मर्यादा यह है कि जो जिस माता-पिता से उत्पन्न हुआ है, वह उनका पुत्र है और उस पुत्र के वे माता-पिता हैं। यह नियम सरकार एवं समाज द्वारा मान्य है।

हमने माता-पिता को चुना नहीं है और हमें भी माता-पिता ने नहीं चुना है। हमारा माता-पिता के साथ जो संबंध है, वह प्रकृतिप्रदत्त ही है। उसमें किसी ने बुद्धिपूर्वक कुछ भी नहीं किया है।

यदि आप अपनी सम्पत्ति किसी को दिये बिना मर जाएँ, किसी के नाम बिना लिखे मर जावे तो सरकार आपकी सम्पूर्ण सम्पत्ति अनेक तकलीफें देनेवाले आपके पुत्र को ही सौंप देगी। जिस पड़ोसी के बेटे ने आपकी दिन-रात सेवा की है; उसे कुछ भी नहीं मिलेगा।

भारतीय कानून प्राकृतिक व्यवस्था पर आधारित है।

दूसरी बात यह है कि कई व्यक्ति कहते हैं कि भाई! जो हमारी सेवा करे, वही हमारा है। जिसे हम अपना माने, वह हमारा बेटा है; पैदा होने मात्र से क्या होता है, वह तो एक क्षणिक विकार था; सो हो गया।

मुनिराजों का भी माता-पिता और पुत्रादिक से लौकिक संबंध है, प्रकृतिप्रदत्त संबंध है, सरकार को मान्य संबंध है; परन्तु मुनिराजों का राग अपने गुरु तथा शिष्यों तक ही सीमित होता है।

वे आत्मा का ध्यान छोड़कर भी शिष्यों को पढ़ाते हैं, वे अपने गुरु की सेवा करते हैं; परंतु वे अपने माता-पिता, पुत्र-पुत्री के लिए कुछ भी नहीं करते हैं। मुनिराजों को अपने माता-पिता को उपदेश देने के लिए जाने का भी विकल्प नहीं आता, उन्हें समाधिमरण करवाने का भी विकल्प नहीं आता।

जिनसे प्राकृतिक संबंध था ह्न ऐसे पुत्रों के लिए वे कुछ भी नहीं करते हैं और शिष्यों के लिए वे प्रतिदिन घंटों पढ़ाते हैं।

इसप्रकार मुनिराजों ने प्राकृतिक संबंधों से इन्कार कर दिया एवं जिनसे कोई संबंध नहीं था, जान-पहिचान भी नहीं थी; उन गुरु व शिष्यों से संबंध जोड़ लिया।

इसीप्रकार प्रवचनसार ग्रन्थ सरकार जैसे आशयवाला है। वह प्राकृतिक वस्तुस्थिति का प्रतिपादक है। जो द्रव्य-गुण-पर्याय हमारी सीमा के भीतर हैं; उन्हें वह अपना कहता है; परन्तु अध्यात्म का प्रतिपादक समयसार कहता है कि हममें ही उत्पन्न होनेवाला राग भी हमारा नहीं है; क्योंकि वह दुखरूप है, दुख देनेवाला है।

यद्यपि निश्चय से राग-द्वेषादि भाव ही हिंसा हैं, तथापि व्यवहार से प्राणियों का घात भी हिंसा ही है।

**प्रश्न ह्न** प्राणियों का घात तो व्यवहार से ही हिंसा है और व्यवहार तो असत्यार्थ है।

**उत्तर ह्न** जो भी हो; पर प्राणियों का घात करनेवाले नियम से नरकादि गति को प्राप्त होंगे; अत: यदि नरक में नहीं जाना है तो व्यवहार हिंसा को भी छोड़ देना चाहिए।

यद्यपि हम किसी जीव को सुखी-दु:खी नहीं कर सकते हैं; वे उनके पुण्य-पाप के उदय के अनुसार ही सुखी-दु:खी होते हैं। यही परमसत्य है; तथापि इसके बहाने यदि कोई अपनी प्रमादचर्या को कायम रखना चाहता है तो यह भी परमसत्य है कि इसके फल में नरक गमन होता है।

लोग ऐसा भी कहते हैं कि ज्ञायक तो ज्ञायक को ही जानता है, पर को नहीं। इसके उत्तर में ऐसा प्रश्न किया जाता है कि ज्ञायक से भिन्न ऐसा कौन-सा दूसरा ज्ञायक है, जिसको ज्ञायक जानता है ? यदि ज्ञायक एक ही है तो उसमें अंश-अंशीरूप भेद करने से क्या लाभ ?

इसप्रकार एक अध्यात्म का और दूसरा सिद्धान्त का सत्य है। अध्यात्म का सत्य अर्थात् समयसार का सत्य एवं सिद्धान्त का सत्य अर्थात् प्रवचनसार का सत्य।

यदि इन दोनों सत्यों को आमने-सामने किया जाय तो कौन शक्तिशाली सिद्ध होगा; वस्तुस्वरूप की कसौटी पर कौन खरा उतरेगा ? सरकार किसे मान्यता देगी, जिस पुत्र को इसने अपना माना है, उसे अथवा जो इसके निमित्त से पत्नी के उदर से उत्पन्न हुआ है, उसे ? **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

## सार समाचार

➔ भारतीय मूल के प्रसिद्ध उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल ने अपने पुश्तैनी जिले चुरु (राज.) के 168 गाँवों में पीने के पानी की व्यवस्था करने का वादा किया।

➔ पाकिस्तान के कायदे-आजम मोहम्मद अलि जिन्ना को धर्मनिरपेक्ष कहने पर, संघ परिवार की टिप्पणियों से आहत होकर भाजपा अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने 7 जून को अपने पद से इस्तीफा दिया।

➔ भारतीय मूल के छात्र अनुराग एवं समीर सुधीर पटेल ने वाशिंगटन अमेरिका में हुई 78 वीं राष्ट्रीय वर्तनी प्रतियोगिता में 51 प्रतियोगियों को पीछे छोड़कर क्रमश: प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

➔ वरिष्ठ कांग्रेसी नेता श्री प्रतापसिंह राणे ने 7 जून को गोवा राज्य के नवीन मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।

➔ सचिन तेंदुलकर टेनिसएल्बो का ऑपरेशन कराकर लंदन से लौटे। चार महिने तक क्रिकेट से दूर रहेंगे।

➔ चित्तौडगढ़-महू होली-डे स्पेशल एक्सप्रेस के इंजिन सहित 7 डिब्बों के पटरी से उतर जाने के कारण 2 लोगों की मौत एवॅ 28 घायल हुए।

➔ राष्ट्रपति अब्दुल कलाम की उक्रेन, आइसलैण्ड एवं स्विट्जरलैण्ड की यात्रा अनेक व्यापारिक एवं सांस्कृति समझौतों के साथ सम्पन्न हुई।

➔ जयपुर में 400 करोड की लागत से विश्वस्तरीय अस्पताल बनाने की योजना।

➔ दिल्ली सिनेमाघर में हुए विस्फोटों के सूत्रधार, 'बब्बर खालसा आतंकवादी संगठन' के प्रमुख खूंखार आतंकवादी जगतार सिंह हवारा उनके दो साथियों सहित अलिपुर नारेला में कानून की गिरफ्त में आये।

➔ प्रसिद्ध अभिनेता शाहरुख खान एम टी.व्ही.यूथ आईकोन चुने गये।

## विद्वत्परिषद दक्षिण भारत इकाई का गठन

**कोल्हापुर :** प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 29 मई, रविवार को श्री अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में विद्वत्परिषद् की दक्षिण-भारत इकाई का राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ। विद्वत्परिषद् के मंत्री डॉ. राजेन्द्र बंसल ने संस्था का परिचय दिया। डॉ. एस.पी. पाटील सांगली ने दक्षिण भारत में विद्वानों को परिषद् से जुड़ने का आह्वान किया। ब्र. यशपाल जैन, पं. रतनचन्दजी भारिल्ल तथा पं. मनोहर मारवडकर ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर श्रीमती इन्दुमती अण्णासाहेब खेमलापुरे को साहित्य प्रकाशन में विशेष सहयोग प्रदान करने हेतु सम्मानित किया । संचालन श्री अखिल बंसल ने किया। इकाई की कार्यकारिणी का गठन निम्नप्रकार हुआ ह्व

**संरक्षक ह्व** ब्र. धन्यकुमारजी भोरे कारंजा, डॉ. विलास संघवे कोल्हापुर, डॉ. सुभाषचन्द अक्कोडे जयसिंगपुर, **अध्यक्ष ह्व** डॉ. एस.पी. पाटील सांगली, **उपाध्यक्ष ह्व** डॉ. एच.सी. संघवे सोलापुर, प्राचार्य श्रीधर हेरवाडे कोल्हापुर, पं. मनोहर मारवडकर नागपुर, **सचिव ह्व** पं. जिनचंद शास्त्री हेर्ले, **संयुक्त सचिव ह्व** पं. महावीर पी. शास्त्री सोलापुर, **कोषाध्यक्ष ह्व** पं. महावीर पाटिल शास्त्री सांगली, **सदस्य ह्व** श्री श्रेणिक अन्नदाते डोंबीवली, श्री रावसाहेब पाटील सोलापुर, पं.आलोक शास्त्री कारंजा, सुश्री स्वयंप्रभा शास्त्री सांगली, **विशेष आमंत्रित ह्व** श्रीमती लीलावती जैन पुणे।

## वैराग्य समाचार

श्रीमती गुलाबदेवी ध.प. श्री शांतिलालजी सोनी, अजमेरवालों का निधन 28 मई को हो गया । आपके परिवार द्वारा जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 101/- रुपये प्राप्त हुये हैं। दिवंगत आत्मा शीघ्र अभ्युदय को प्राप्त हो - यही भावना है।

**( पृष्ठ 1 का शेष ....)**

मुझसे उन्होंने अनगिनत फोन कर-करके यह प्रेरणा दी कि आप पंचास्तिकाय ग्रन्थ का अनुशीलन लिखें। समयसार एवं प्रवचनसार का अनुशीलन तो डॉ.भारिल्ल कर ही रहे हैं। मैंने उन्हें आश्वस्त किया तथा प्रारंभ भी किया, किन्तु इसीबीच मैं हृदय रोग से पीड़ित हो गया। तो बार-बार ये फोन आने लगे कि अभी आप पूर्ण विश्राम करें, पंचास्तिकाय अनुशीलन की चिन्ता न करें।

सचमुच उनके हृदय में हमारे (ट्रस्ट) परिवार के लिये धर्मस्नेह कूट-कूटकर भरा था। उनका स्मरण आते ही मेरी आंखों में पानी आ जाता है। उनके स्वर्गवास होने का समाचार जानकर धक्का लगना स्वाभाविक ही था; परन्तु विधि का विधान अटल है, उसे कोई नहीं टाल सकता। ठीक ही कहा है -

**जा करि जैसे जाहि समय में जो होतव जा द्वार।**
**सो बनिहै, टरिहै कछु नाहीं कर लीनो निरधार।।**

हमारी हार्दिक भावना है कि आदरणीय पाटनीजी की आत्मा को अविलंब सच्ची सुख-शांति प्राप्त हो, वे अपने लक्ष्य को पूर्णकर शीघ्र मुक्ति प्राप्त करें तथा समस्त परिजनों को उनके वियोग जनित दु:ख को सहनकरने की शक्ति प्राप्त हो। ॐ शांति ! शांति ! शांति ... **– रतनचन्द भारिल्ल**

## गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

**कोल्हापुर :** शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 25 मई को आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा के छात्रों द्वारा विविध विषयों पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता पण्डित कोमलचन्दजी जैन टड़ा ने की। मुख्यअतिथि श्री शांतिनाथजी खोत तथा विशिष्ट अतिथि ब्र. यशपालजी, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल एवं श्री दीपक जैन थे।

संचालन संस्था के प्राचार्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ने किया।

**देखना ना भूलें !**

**साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन सोमवार से शनिवार तक प्रतिदिन रात्रि 10.25 से 10.45 बजे तक देखना ना भूलें ।**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जून (द्वितीय) 2005
**J. P. C. 3779/02/2003-05**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**तार :** त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127